accounts of the National Ccoperative Consumers Federation of India Ltd. for 1981-82 and 1982-83, it has not suffered any loss during these years. The accounts for the year 1983-84 are under preparation.

(b) and (c). Do not arise.

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान जोधपुर द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

3227. श्री बुद्धि चन्द्र जैन : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय शुष्क क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जोधपुर कितने वर्षों से अनुसंधान कार्य कर रहा है ;

(ख) उक्त संस्थान द्वारा प्राप्त की गई विशेष उपलब्धियों का ब्यौरा क्या है ; और

(ग) रेगिस्तानी क्षेत्रों में आमूल-चूल परिवर्तन लाने और किसानों को समृद्ध बनाने में इन उपलब्धियों का क्या योगदान है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाना) : (क) इस संस्थान की स्थापना सन् 1959 में भूतपूर्व मरुभूमि वनरोपण मृदा संरक्षण केन्द्र का पुनर्गठन करके की गई थी।

(ख) केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ने मरु बागवानी, पनाह-पट्टी की स्थापना, बालू टीबा स्थिरीकरण, वनरोपण और पेड़ लगाना, फसल उत्पादन को सुधारना और स्थिर करना, वाटर हार्वेस्टिंग, सौर ऊर्जा उपयोग, कृषि में लवणीय जल का उपयोग, कृतक कीट नियंत्रण आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है।

(ग) बेहतर भूमि उपयोग आयोजन और इसके प्रबन्ध को प्रोत्साहन देने के लिये केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान ने 93,500 वर्ग कि० मी० क्षेत्र पर बहुशाखीय समाकलित प्राकृतिक संसाधन सर्वेक्षण पूरा कर लिया है।

अभी तक वन वृक्षों की 4, 8, 460 से अधिक पौधें, बेर के 22,900 कलमी पौधे और वृक्ष प्रजातियों का 18.07 टन बीज तथा घास प्रजातियों का 36.06 टन बीज राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों के किसानों तथा विकास विभागों को वितरण किया जा चुका है।

केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान ने 1000 हैक्टर क्षेत्र पर बालू टीबा स्थिरीकरण प्रौद्योगिकी को प्रदर्शित किया है।

मार्गों के किनारे पेड़ लगाने की तकनीकों का भी विकास किया गया और इन्हें मानकीकृत किया गया है। इस तकनीक का पालन करते हुए केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान ने वृक्षविधि तथा बाड़ों के रूप में 200 कि० मी० के मार्गों के किनारों पर पेड़ लगाये हैं तथा उन्हें राज्य सरकार को सौंप दिया है।

पनाह पट्टियों और बाड़ों को बढ़ाने की तकनीकों का विकास किया गया तथा इन्हें मानकीकृत किया गया। इस तकनीक का पालन करते हुए केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान ने फसलों की सुरक्षा के लिए केन्द्रीय यांत्रिकृत फार्म, सूरतगढ़ में पता लगाई गई उपयुक्त प्रजातियों से 95 कि० मी० क्षेत्र पर पनाह पट्टियों की स्थापना की है।

केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान द्वारा उत्पादित प्रौद्योगिकी का अन्य कार्यक्रमों जैसे सूखा प्रवृत्त क्षेत्र कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम तथा राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के माध्यम से भी उपयोग किया जा रहा है।

राजस्थान के रेगिस्तान के विकास के लिए राज्य सरकार ने भी एक रेगिस्तान विकास बोर्ड तथा एक पृथक रेगिस्तान वनरोपण और चरागाह विकास विभाग की स्थापना की है। केन्दीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित सुधरी प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए संस्थान राज्य विभागों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाए हुए हैं।